ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 118-119**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

रामायण तथा महाभारत में नारी समाज

डॉ० नीलम कुमारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, अवधेश प्रसाद महाविद्यालय, नदौल, मसौढ़ी, पटना (बिहार) भारत

Received-20.02.2025, Revised-27.02.2025, Accepted-02.03.2025 **E-mail : neelam.monirba@gmail.com**

सारांशः काव्य के क्षेत्र में रामायण को आदि काव्य माना गया है। वास्तव में रामायण वह गौरव ग्रन्थ है जिसमें भारतीय संस्कृति अपने उज्जवल परम्परा की पहचान कर सकती है। यही कारण है कि भारतीय उपमहाद्वीप में रामायण इतना लोकप्रिय और पूज्य हुआ तथा राम–सीता जीवन के आदर्श बने। रामायण में नारी चरित्र की पराकाष्ठा को देखा जा सकता है। इसमें सीता का चरित्र सारे भारत के लिए पवित्रता, उच्चता तथा विशुद्ध का प्रतीक बन गया। इसीलिए आज भी भारतीय नारी को आशीष देते समय सीता समान बनने के लिए कहा जाता है।

कुंजीभूत शब्द– नारी समाज, गौरव ग्रन्थ, भारतीय संस्कृति, उज्जवल परम्परा, लोकप्रिय, पवित्रता, उच्चता, विशुद्ध का प्रतीक

नारी के उत्कर्ष को रामायण काल में बखूबी देखा जा सकता है। इस काल में कन्याओं के प्रति अपार स्नेह और सम्मान का स्रोत कायम था, न तो किसी प्रकार का द्वेष था और न ही घृणा या विक्षोभ ही इस का साक्षात प्रमाण तो यही है कि धरती से निकली सीता का पालन–पोषण जनक की पत्नी ने अत्यधिक लाड़–प्यार से किया था।[1] दूसरा तथ्य भी नारी के सम्मान को इस रूप में प्रदर्शित करता है जिसमें राम जब बनवास से लौटे थे वो उनके राज्याभिषेक के समय सबसे पहले कन्याओं ने जल का अभिषेक किया[2], परन्तु ए० बी० कीथ ने अपने विचारों से इस बात की पुष्टि की है कि इस काल में नारी विषयक विचारों के मामले में विद्वानों के बीच मतैक्य नहीं था। पहले की अपेक्षा नारियों के अधिकार सीमित हो गए थे। उन्हें पुरुष की सम्पत्ति में रूप माना जाने लगा था। यज्ञ आदि कार्यों में उनकी अनिवार्यता समाप्त हो गयी थी।[3]

कन्याओं के सम्बन्ध में कई तरह की समस्याएँ भी रामायण काल में उत्पन्न हो गयी थी। सर्वप्रथम तो उनके विवाह की समस्या थी जिसमें दहेज की असमर्थता के कारण वर प्राप्ति में भी कठिनाई होती थी। उनके नैतिक चरित्र के बारे में भी सोचना पड़ता था। विवाह के बाद उनके पारिवारिक दुख–सुख की चिन्ता भी व्याप्त थी। स्वयंवर की परम्परा कायम तो थी, परन्तु कन्या स्वेच्छा से वर का चुनाव नहीं कर पाती थी। वर के चुनाव में पिता की भूमिका ही प्रमुख थी।

जहाँ तक रामायण काल में स्त्री शिक्षा की बात है उसमें स्त्रियों को शिक्षा प्रदान करने की परम्परा तो थी परन्तु पुरुषों की तरह उन्हें भी आश्रम में ही शिक्षा प्रदान की जाती थी। उस समय शिक्षा के मुख्य तीन क्षेत्र थे– शारीरिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा। इस अवस्था के अन्तर्गत क्षत्रिय कन्याओं को खास कर युद्ध की एवं राजधर्म की शिक्षा ही दी जाती थी। स्त्रियों को रथ संचालन और प्राथमिक चिकित्सा की भी शिक्षा दी जाती थी।[4] इसका प्रमाण कैकेयी द्वारा युद्ध क्षेत्र में घायल दशरथ की प्राण बचाने के कौशल से मिलता है। स्वयंवर में सीता द्वारा धनुष को उठा लेने से यह बात भी प्रमाणित हो जाती है कि उस काल में स्त्रियाँ बलवती भी होती थी जिसके कारण वे कठिन से कठिन समय में भी अपने कर्म क्षेत्र से दिगती नहीं थी[5] कि राजनीति के क्षेत्र में भी स्त्रियों का निपुण होना सीता और कैकेयी के राजनीतिक प्रभाव से सिद्ध होता है। वशिष्ठ मुनि के इस कथन से राम के वन चले जाने पर सीता राज्य कार्य सम्भाल ले, इसी बात की पुष्टि होती है। कौशल्या और बालि की पत्नी के शिक्षित होने का जो उल्लेख मिलता है इससे यह स्पष्ट होता ह कि उस काल में नारियों के लिए सभी तरह की शिक्षा व्यवस्था कायम थी।[6]

प्राचीन काल में स्त्री और पुरुष दोनों ही शिक्षा देने का कार्य करते थे। उस समय पुरुष शिक्षकों के लिए श्उपाध्यानिसश और स्त्री शिक्षकों के 'उपाध्याय' की संज्ञा प्रचलित थी। उपर्युक्त शब्द इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं कि स्त्री और पुरुष दोनों ही शिक्षा प्रदान करने का कार्य करते थे किरामायण काल में दहेज प्रथा का प्रचलन अनिवार्य रूप से नहीं था, परन्तु उपहार अवश्य दिए जाते थे। बहुविवाह की प्रथा प्रचलित थी। इसमें अधिकांशतरू उच्चवर्ग के लोग ही एक से अधिक शादियाँ करते थे। प्रेम का स्वरूप अत्यधिक स्वस्थ्य रूप में था। सामाजिक, पारिवारिक, गृहस्थाश्रम, सांसारिक आदि सुखों के रूप में विवाह को मान्यता मिली थी। राजनीतिक क्षेत्र में भी नारी सक्रिय थी। परिवार के तमाम कार्यों को महिलाएँ ही सम्भालती थीं। स्त्रियों के लिए शिष्ट शब्दों का व्यवहार किया जाता था। पत्नी का भरण–पोषण और उनकी सुरक्षा के प्रति पुरुष अपनी जिम्मेवारी को बखूबी निभाते थे। स्त्रियाँ भी पति का सम्मान करती थीं। पति को देवतातुल्य मानकर उसकी पूजा करती थीं।

स्त्रियों का विधवा हो जाना उनके लिए दुखद तो होता ही था परन्तु समाज में उन्हें उपेक्षा के बजाए सम्मान और आदर दिया जाता था। वे तमाम मंगल कार्यों में अपनी भूमिका निभाती थी। परन्तु विधवा का पुनः विवाह करना वर्जित था, या तो वे तपस्या कर सकती थी या सती हो सकती थी। सतीप्रथा की शुरुआत विधवा विवाह बन्द करने के पश्चात् ही हुई ।

रामायण काल में स्त्रियों के अन्दर कुछ दोष भी पाए गए हैं, जिनको कैकेयी के स्वार्थमय कुविचार[7] सीता का स्वर्णमृग के लिए हठ[8] स्त्रियों का इर्ष्यालू दयाहीना एवं कठोरवाणी जैसे दोषों के रूपों में देखा जा सकता है।[9] जैसा कि डॉ० गजानन शर्मा का कहना है कि–"रामायण काल में नारी की स्थिति, सर्वज्ञ एक सी नहीं रही है। नारी ने स्वयं अपने पतन की राह में पग रखना शुरु कर दिया था। फिर भी रामायण कालीन नारी का स्वरूप बड़ा भव्य एवं उदस्त हैं।

महाभारत और नारी समाज–यह गौरतलब है कि जिस किसी भी देश की सभ्यता एवं संस्कृति अपने विकास यात्रा को पूरी की उसमें नारी की भूमिका उल्लेखनीय रही है। परन्तु प्रत्येक देश और में स्त्री की अपेक्षा पुरुष को प्रधानता दी जाती रही ।

महाभारत का काल स्त्री के लिए एक तरफ सम्मान का काल रहा है तो दूसरी ओर उसके पतन का भी जिम्मेदार रहा है। जिस नारी को वेदकालीन समाज में आदर और सम्मान दिया जाता था वह महाभारत में आकर पुण्य की वस्तु बन गयी। उसका मुख्य धर्म पतिव्रत ही बन गया। इसी काल में पत्नी को अर्द्धांगिनी की उपाधि मिली तथा उसे पुरुष का श्रेष्ठ मित्र भी कहा गया।[10] एक तरफ उसे भाग्यशीला तथा पुण्यवती बताया गया तो दूसरी तरफ उसे पुरुष की निजी सम्पत्ति मानकर उसे दांव पर भी लगाया गया। युधिष्ठिर द्वारा द्रोपदी को जुए के दांव पर लगाना उस काल में स्त्री–दुर्दशा की ही परिचायक है।[11]

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

महाभारत काल में भी पुत्री और पुत्र में पर्याप्त भेदभाव बरता जाता था। ऐसा नहीं कि कन्या को बिल्कुल ही अप्रिय समझा जाता था परन्तु पुत्र की अपेक्षा पुत्री के प्रति सम्मान की भावना बहुत ही कम थी। इसका मुख्य कारण पुत्रियों के शादी–विवाह की समस्या ही थी जबकि पुत्र को दोनों लोकों को सुधारने वाला माना जाता था।[12] जिस व्यक्ति को कोई पुत्र नहीं होता वह कन्या को ही अपना उत्तराधिकारी घोषित करता था– यह तथ्य यह साबित करता है कि कन्याओं के लिए घृणा या अपमान की भावना उतनी प्रबल नहीं थी फिर भी पुत्रों से कम ही सम्मान उन्हें मिलता था। पुत्रों की पुत्रियाँ को सद्आचारण एवं सद्व्यवहार के द्वारा कुल मर्यादा की रक्षा में तत्पर रहती थी।[13] इस काल में आकर कन्याओं के लिए किया जाने वाला उपनयन संस्कार समाप्त हो गए, जिनका प्रभाव सीधे स्त्री के अधिकारों पर पड़ा।

शिक्षा के मामले में भी स्त्री शिक्षा को महाभारत काल में काफी प्रश्रय मिला। हां एक बात अवश्य हुई कि अब स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा आश्रमों एवं गुरुकुलों के बजाए घर में ही होने लगी थी। विद्वान अतिथि के रूप में घर पर आकर शिक्षा प्रदान करते थे। धर्मपरायण होने के चलते स्त्रियों के लिए धार्मिक शिक्षा की भी व्यवस्था थी।[14] महाभारत काल में स्त्रियों के लिए वेद अध्ययन की प्रथा को समाप्त कर दिया गया, क्योंकि स्त्री का वेद के अध्ययन के सम्बन्ध में महाभारत में कहीं भी उल्लेख नहीं है।

महाभारत के समय में नारी शिक्षा बहुउद्देशीय थी। इसका उद्देश्य सिर्फ उपाधि प्राप्त करना या जीविका चलाना ही नहीं था, बल्कि शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मशक्ति के विकास द्वारा आचार–विचार में विवेक, धर्म नैतिक–भावना, आत्मविश्वास, कर्तव्य–निष्ठता आदि के गुणों का विकास करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था। सम्पूर्ण शिक्षा का आधार राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक नीतियों से जुड़ा हुआ था।[15]

महाभारत में विवाह आठ प्रकार से होते थे– स्त्रियों को परम गति की प्राप्ति के लिए विवाह–संस्कार को ही मंत्र– परस्कृत कर संस्कार प्रदान किया जाता था। माता–पिता और अभिभावकों की इच्छा ही वैवाहिक सम्बन्धों में मुख्य भूमिका अदा करती थी। दहेज का प्रचलन नहीं होने से विवाद को समस्या के रूप में नहीं देखा जाता था। इस समय बाल–विवाह की प्रथा भी शुरु हो चुकी थी जिसकी मात्रा अभी कम थी। विधवा विवाह पर रोक थी, परन्तु सती होने के मामले में स्त्री को पूर्णतरू स्वतंत्र रखा गया था। विधवा अपने परिवारजनों के साथ रहकर भरण–पोषण करती थी। समाज में उन्हें आदर प्राप्त था।[16]

पर्दा का प्रचलन महाभारत काल में नहीं था, परन्तु स्त्रियों का घर रहना ही अच्छा माना जाता था। उन्हें पुरुषों के अधीन रहने के लिए बाध्य किया जाता था। सामाजिक स्वतंत्रता में नारी को पूरी आजाद नहीं थी। उन्हें इस बात के लिए बाध्य किया गया कि पति सेवा ही उनका एकमात्र धर्म है।[17]

सम्पत्ति के मामले में नारी को कोई अधिकार नहीं दिया गया था। पिता या पति के धन पर पुत्री या पत्नी का कोई अधिकार नहीं था। स्त्री धन पर ही स्त्री अधिकार को दिया गया था। स्पष्ट है कि पहले की अपेक्षा महाभारत काल में नारी और ज्याद पतन की ओर उन्मुख हुई। एक से अधिक पत्नी रखने के कारण स्त्रियों की मान प्रतिष्ठा पर आंच पहुँची। कई तरह के दोषो का मंडन किया गया। भीष्म का यह कथन इसी बात की पुष्टि करता है 'प्रजापति को जहाँ लोगों के धर्मात्मा होने के कारण देवताओं से स्वर्ग भर जाने की आशंका उत्पन्न हुई, तब ही पुरुष को पुष्टि करने हेतु नारी की सृष्टि की गयी थी। स्त्री जाति के पति इसी दुर्भावनापूर्ण विचार के कारण उसे भाया, पापिनी, चंचला, सर्पिणी, झाग, विष, आदि की संज्ञा देकर उसे घातक माना गया है। फिर भी उन्हें समाज में आदर प्राप्त था, वे राज्यकार्य में अपनी भूमिका निभाती थी।

मानव सभ्यता के लम्बे इतिहास में कई विचारकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए जिसमें स्पष्ट रूप से यह पाया जाता है कि मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में स्त्रियों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है, परन्तु इनकी भूमिका को प्रशंसा की नज़र से सराहना कर देने मात्र से नारी के सम्पूर्ण चरित्र का आकलन नहीं हो जाता। नारी के सम्पूर्ण चरित्र को समझने के लिए भारतीय संस्कृति के तमाम रूपों के साथ इनकी भूमिका का अध्ययन आवश्यक हो जाता। यह स्पष्ट ही कहा जा सकता है। कि प्राचीनकाल की नारियों का जो उज्जवल चरित्र अपनी गरिमा और गौरव को प्राप्त हुआ था आज आधुनिक काल में भी नाना प्रकार के परिवर्तनों के बावजूद कायम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सीता पृथ्वी, भेद करके निकली थी (पा०रा०, 2/118/28/29.
2. बाल्मीकी रामायण, 6/128/62.
3. ए०बी० कीथ, दी रिलीजन एण्ड फिलासफी ऑफ दी वेद एण्ड उपनिषद्, प्रथम ग्रन्थ, पृ०–247.
4. बाल्मीकी रामायण, 2/26/4.
5. डॉ० गजानन शर्मा, प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी, रचना प्रकाशन, इलाहार, 1971, पृ०–80.
6. डॉ० अलतेकर, दि पोजीशन ऑफ वुमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, बनारस, 1956, पृ०–13.
7. बाल्मीकी रामायण, 2/12.
8. वही, 3/53/2.
9. महाभारत, 1/74/40.
10. वही, 5/38/10.
11. आरण्यक, 277/23–24.
12. वही
13. अनुशासन पर्व, 55.
14. डॉ० अल्तेकर, दी पोजीशन ऑफ वुमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, बनारस, 1956.
15. डॉ० वनमाला भवालंकर, महाभारत में नारी, अभिनव साहित्य प्रकाशन, सागर, 1964, पृ०–53.
16. वही, पृ०–28.
17. महाभारत, 5/34/75.

*****